ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

A Referred Peer Review Research Journal

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026

Manuscript Information	Research Paper	Paper No. VBRP-27

SDG 6: एक वैदिक दृष्टिकोण

Dr.Kiran Baderiya, *PMCOE Madhav College, Ujjain*

सारांश

संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित सतत विकास लक्ष्यों)Sustainable Development Goals - SDGsSDGमें (-का उद्देश्य 6 **सभी लोगों के लिए स्वच्छ जल तथा स्वच्छता कीउपलब्धता एवं उसका सतत प्रबंधन सुनिश्चित करना है। जल जीवन का मूल आधार है। भारतीय वैदिक परंपरा में जल को केवल भौतिक संसाधन नहीं , जीवनदाता तथा सृष्टि ,बल्कि दिव्य तत्व रूप में स्वीकार किया गया के मूलाधार के नदियों की ,है। वेदों में जल संरक्षण पर्याव ,पवित्रतारणीय संतुलन तथा प्रकृति के प्रति श्रद्धा का संदेश मिलता है।**

शब्द कुंजी : SDG-6, **जल संरक्षण**, वेद, पर्यावरण, दर्शन, सतत विकास।

प्रस्तावना

इक्कीसवीं शताब्दी में विश्व जल संकट, जल प्रदूषण तथा स्वच्छता की समस्याओं से जूझ रहा है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्टों के अनुसार विश्व की बड़ी जनसंख्या अभी भी सुरक्षित पेयजल से वंचित है। इसी समस्या के समाधान हेतु संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 2015 **में** 17 **सतत विकास लक्ष्य निर्धारित किए, जिनमें** SDG-6 **विशेष रूप से स्वच्छ जल और स्वच्छता पर केंद्रित है।**

भारतीय दर्शन में जल को पंचमहाभूतों में एक माना गया है। ऋषियों ने जल को जीवन, स्वास्थ्य, कृषि तथा आध्यात्मिक उन्नति का आधार माना। वेदों में जल को देवत्व प्रदान करते हुए उसकी रक्षा और शुद्धता पर बल दिया गया है। इस दृष्टि से SDG-6 **के उद्देश्य वैदिक चिंतन से अत्यंत निकटता रखते हैं।**

SDG 6 और वैदिक जल-चेतना

1: **सुरक्षित और सस्ता पेयजल।**

2: **स्वच्छता और स्वच्छता** (hygiene)**।**

3: **जल गुणवत्ता, अपशिष्ट जल उपचार और पुनः उपयोग।**

4: **जल-उपयोग दक्षता और जल संकट में कमी।**

5: **एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन** (IWRM)**।**

6: **जल-संबंधी पारिस्थितिक तंत्रों की रक्षा।**

वैदिक दर्शन में जल की अवधारणा

1. **ऋग्वेद में आपः सूक्त** (10.9)

ऋग्वेद 10.**के मंत्र जल को देवी रूप में** 9 **पूजते हैं। जल वायुमंडल को तरोताजा रोगों शक्ति प्रदान करता है और ,बनाता है से मुक्ति दिलाता है।**

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

"आपः सुप्ताः श्येन इव दीयमानाः" — जल श्येन पक्षी की तरह स्वच्छ और तेज गति वाला है।

यह SDG 6.3 (जल गुणवत्ता) और 6.1 (स्वच्छ पेयजल) से सीधा संबंध रखता है। जल को "मयोभुवः" (सुखदायक) कहकर वैदिक दर्शन सिखाता है कि जल का दुरुपयोग मानवता का आत्म-विनाश है।

2. वरुण और जल की नैतिक व्यवस्था

वरुण ऋग्वेद में जल के अधिपति और ऋत)cosmic order) के रक्षक हैं। वरुण का कोई पाप नहीं छिपा सकता। जल शुद्धि के साथ नैतिक शुद्धि भी जोड़ता है। आज के जल प्रदूषण)industrial waste , sewage "भंग-ऋत"में को वैदिक दृष्टि (माना जा सकता है।

3. अथर्ववेद और जल-संरक्षण

अथर्ववेद में जल को औषधि कहा गया है। पृथ्वी सूक्त (12.1) में जल चक्र का उल्लेख है। जल को खोदने या दूषित करने से बचने की चेतावनी है। यह SDG 6.4 (सतत निकासी) और 6.6 (पारिस्थितिकी रक्षा) से मेल खाता है।

4. यजुर्वेद और सामवेद

यजुर्वेद में यज्ञ के दौरान जल का उपयोग शुद्धिकरण के लिए है। सामवेद की लय जल की धारा की तरह प्रवाहमय है।

5. उपनिषदों में जल

ईशावास्य उपनिषद् में "ईशावास्यमिदं सर्वम्" — जल भी ईश्वर से व्याप्त है। तैत्तिरीय उपनिषद् में जल को पंच महाभूतों में शामिल किया गया है।

SDG 6 Targets और वैदिक तुलना

1. स्वच्छ पेयजल (6.1) और आपः सूक्त

वैदिक काल में नदियां ,यमुना ,गंगा) देवी रूप थीं। जल को उबालकर (सरस्वती या मंत्रों से शुद्ध किया जाता था। आज के जल संकट में यह पारंपरिक ज्ञान)rainwater harvesting ,stepwells (उपयोगी है।

2. स्वच्छता और स्वच्छता (6.2)

वैदिक संस्कृति में स्नान, आचमन और शौच के नियम (mantra-based hygiene) थे। "शौच" शारीरिक और मानसिक शुद्धि दोनों है।

3. जल गुणवत्ता और पुनः उपयोग (6.3)

वेदों में अपशिष्ट जल को नदियों में नहीं बहाने की चेतावनी है। यज्ञ की राख जल शुद्धि में मदद करती थी।

4. जल दक्षता और संकट न्यूनीकरण (6.4)

"मा ते हृदयमर्पयाम" (अथर्ववेद) — जल के हृदय को चोट न पहुंचाएं। सतत उपयोग का स्पष्ट संदेश।

5. एकीकृत प्रबंधन और पारिस्थितिकी (6.5-6.6)

नदियों को देवी मानकर उनका संरक्षण। वन और जल एक-दूसरे से जुड़े हैं (ऋत)।

दार्शनिक आयाम

वैदिक दर्शन में जल प्राण (जीवन शक्ति) है। अपः सूक्त जल को मां की तरह देखता है जो ऊर्जा देती है। SDG6 को इस दृष्टि से देखें तो जल संकट नैतिक संकट

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

है भंग का -असंतुलन और ऋत ,लोभ - परिणाम।

करुणा और समानता: सभी प्राणी जल पर निर्भर। "वसुधैव कुटुम्बकम्" जल न्याय (water justice) की नींव है।

सततता (Sustainability): जल अनंत नहीं है। वैदिक यज्ञ और संयम उपभोग संस्कृति का विकल्प हैं।

भारतीय दार्शनिक परंपराओं में जल का महत्व

सांख्य दर्शन - सांख्य दर्शन में जल पंचमहाभूतों में एक है। यह जीवन की भौतिक संरचना का आवश्यक तत्व है।

योग दर्शन - पतंजलि योगसूत्र में शौच (स्वच्छता) को नियमों में स्थान दिया गया है। स्वच्छता का संबंध स्वच्छ जल से है।

वेदांत दर्शन - वेदांत के अनुसार समस्त जगत ब्रह्म की अभिव्यक्ति है। अतः प्रकृति और जल का सम्मान आध्यात्मिक कर्तव्य है।

जल संरक्षण की वैदिक नैतिकता

वैदिक नैतिकता निम्न सिद्धांतों पर आधारित है—

1. अहिंसा

जल स्रोतों को प्रदूषित करना पर्यावरणीय हिंसा है।

2. संयम

जल का अनावश्यक उपयोग न करना।

3. यज्ञ भावना

यज्ञ का तात्पर्य केवल अग्निहोत्र नहीं बल्कि लोककल्याण के लिए त्याग भी है।

4. कृतज्ञता

जल के प्रति आभार की भावना।

वर्तमान जल संकट और वैदिक समाधान

आज विश्व जिन समस्याओं का सामना कर रहा है—

भूजल का अत्यधिक दोहन

नदियों का प्रदूषण

औद्योगिक अपशिष्ट

जलवायु परिवर्तन

जल की असमान उपलब्धता

इन समस्याओं के समाधान हेतु वैदिक दृष्टिकोण निम्न प्रकार उपयोगी है—

प्रकृति के प्रति श्रद्धा।

सीमित उपभोग।

सामुदायिक सहभागिता।

जल संरक्षण।

वृक्षारोपण।

नदी संरक्षण।

निष्कर्ष

SDG-6 का लक्ष्य मानवता के लिए स्वच्छ जल और स्वच्छता सुनिश्चित करना है। वैदिक साहित्य जल को जीवन, स्वास्थ्य, आध्यात्मिकता तथा पर्यावरणीय संतुलन का आधार मानता है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा उपनिषदों में वर्णित जल संबंधी शिक्षाएँ आधुनिक सतत विकास की अवधारणा से अत्यंत सामंजस्य रखती हैं। वर्तमान जल संकट के समाधान के लिए केवल तकनीकी उपाय पर्याप्त नहीं हैं; इसके लिए नैतिक एवं दार्शनिक चेतना भी आवश्यक है। वैदिक पर्यावरण दर्शन मानव और प्रकृति के बीच संतुलित संबंध स्थापित कर SDG-6 की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

1.**ऋग्वेद, सायण भाष्य सहित, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।**

2.**यजुर्वेद, गीता प्रेस, गोरखपुर।**

अथर्ववेद, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।

3.**ईशावास्योपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर।**

4.**पतंजलि योगसूत्र, चौखम्बा प्रकाशन।**

5.United Nations, Transforming Our World: The 2030 Agenda for Sustainable Development, 2015.

Radhakrishnan, S. 6.Indian Philosophy, Vol. I–II, Oxford University Press.

7.Ecology and Environmental Ethics, Motilal Banarsidass.

Dwivedi, O.P. 8.Environmental Crisis and Hindu Religion, New Delhi.